भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 41 अंक : 5	4.10.2018 गुरुवार (सितंबर - अक्तुबर)	वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

सुहृदभाव के रंगों से
दिव्य युगलबंधु को भक्ति का अर्घ्य चढ़ाने चलो... महातीर्थ सांकरदा !

आइए...

दिनाँक 27 (गुरु), 28 (शुक्र), 29 (शनि) व 30 (रवि) दिसंबर 2018 के महामंगलकारी चार दिन

गुणातीत समाज के आद्य सर्जक, प्रणेता एवं प्राणाधार

गुरुहरि काकाजी और गुरुहरि पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव के

अंतिम चरण के दौरान

गुजरात के सांकरदा महातीर्थ के भव्य नूतन मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा का

दर्शन करके-साक्षी बन कर, योगी परिवार का गौरव बढ़ाने हेतु अंतर से भक्ति अदा करें और

प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के आशीर्वाद प्राप्त करके नए वर्ष 2019 का शुभारंभ करें...

जीवन में नवीनता का संचार करता शरदऋतु का पर्व...

भारत की सांस्कृतिक भूमि में वर्षों से विभिन्न त्यौहार मनाये जाते हैं।

प्रतिवर्ष की भाँति अब की बार शरद ऋतु के आगमन पर –

- **18 अक्तुबर – दशहरा**
- **24 अक्तुबर – शरदपूर्णिमा**
- **7 नवंबर – दीपावली**
- **8 नवंबर – अन्नकूट, नूतन वर्ष**

मानवजीवन को नवीनता प्रदान करने के लिए आ रहे हैं। परंतु, इस बार के ये उत्सव विशिष्ट कहे जाएँ; क्योंकि गुणातीत समाज के आद्य सर्जक-**बंधुजोड़ी गुरुहरि काकाजी–गुरुहरि पप्पाजी की शताब्दी** के अंतिम चरण का यह वर्ष है।

27 दिसंबर से 30 दिसंबर के चार दिन पूरा गुणातीत समाज मिल कर, **'सांकरदा तीर्थभूमि'** के प्रांगण में गुरुवर्य योगीजी महाराज के संप, सुहृदभाव एवं एकता के सिद्धांतानुसार मना कर, गुणातीत स्वरूपों

की रुचि, रहस्य व अभिप्राय में जुड़ने का संकल्प करेगा और... पूर्ण विश्वास है कि हमारे दिव्य विभु गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी सबके अंतर की प्रार्थना अवश्य सुनेंगे ही। प्रगट की उपासना करने वाले, निष्ठा वाले मुक्तों के लिए तो सभी त्यौहार जगत से भिन्न रूप में होते हैं।

दशहरा यानि अनीति, अत्याचार और बुराई पर धर्म, सत्य व अच्छाई की विजय का प्रतीक! श्री राम द्वारा रावण पर विजय तो केवल निमित्त मात्र था। सही मायने में तो रावण यानि अपने भीतर निहित भयंकर अहंकार, मान का दर्शन होने के बावजूद भी जो उससे छूट कर, परम सत्य स्वरूप श्री राम को पूर्ण समर्पित न हो पाया–ऐसा अभागा जीव! दशहरा यही संदेश देता है कि अपने गुणों पर अहम् न करो, जिनकी कृपादृष्टि से हमने अति दुर्लभ मानवजीवन प्राप्त किया है उन्हें प्रतिक्षण धन्यवाद करो।

गुरुवर्य योगीजी महाराज ने विजयादशमी के ऐसे आध्यात्मिक विजय दिन पर **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** को अक्षरमंदिर, गोंडल में पार्षदी दीक्षा प्रदान करते हुए आशीर्वाद दिया था– *तुम्हें माया पराभव नहीं कर सकेगी।*

साधना की पराकाष्ठा का दर्शन कराता प.पू. स्वामीजी का सपूंर्ण जीवन यही अनुभूति कराता है कि ऐसी ब्रह्मस्वरूप विभूतियों की मरज़ी में स्वयं को ढाल कर उन्होंने न केवल बाह्य व आंतरिक माया को अपने वश किया, बल्कि अपने संपर्क में आते मुक्तों को भी केवल प्रभु का होकर, प्रभु का ही आधार रखते हुए, उनसे ही बल लेने की अद्‌भुत सूझ देकर जीवन का लक्ष्य निर्धारित करके निहाल किया! कोटि-कोटि वंदन व नमन ऐसे समर्थ गुरु एवं उनके अभिप्राय को आत्मसात् करने वाले समर्थ शिष्य को!

शरदपूर्णिमा यानि शीतलता का प्रतीक! पूर्णिमा तो प्रत्येक माह आती है, परंतु अश्विन मास की शरदपूर्णिमा का महत्व कुछ विशेष है। मान्यता है कि इस मध्यरात्रि के समय चंद्रमा की किरणों से अमृत झड़ता है। जिस प्रकार शरद का यह चाँद मनुष्य के शारीरिक रोगों का निवारण करता है, उसी प्रकार जन्मों से जीव से चिपके मूल स्वभावों के रोगों से मुक्त कराने के लिए **अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी** ने सांकेतिक रूप से अपने **प्रादुर्भाव** के लिए शरदपूर्णिमा का पवित्र दिन ही चुना...

सच, यदि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी का पृथ्वी पर अवतरण न हुआ होता तो–

- आत्यंतिक कल्याण का स्पष्ट राजमार्ग कैसे प्रशस्त होता ?
- गुणातीत परंपरा की ज्योत कैसे प्रज्वलित रहती ?
- जीव को अखंड सौभाग्यवंता - सनाथ कौन बनाता ?
- सच्ची साधुता का आदर्श कौन स्थापित करता ?
- एकांतिक धर्म क्या और कहाँ उपस्थित है, उसकी पहचान कौन कराता ?
- एक बेजोड़ व अकल्पनीय दासभाव का दर्शन कौन कराता ?
- मानवदेह में विचरते प्रगट प्रभु की पहचान कौन कराता ?
- रुढ़ियों से ग्रसित अंधविश्वासी समाज को प्रभु के बल के क़ैफ से बलिष्ठ कौन बनाता ?

इसीलिए तो **गुरुवर्य योगीजी महाराज** ने 1965 की शरदपूर्णिमा के मंगलकारी दिन गोंडल में **प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी** को **भागवती दीक्षा** अर्पित करके, हमारे 'उज्ज्वल भावि' का मानो बिगुल बजाया। भागवती दीक्षा लेने के बाद प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी 'अन्नकूट' उत्सव तक वहीं रुके थे। इस दौरान गुरुहरि काकाजी महाराज ने उन्हें असली गुणातीत रीति-नीति और स्थिति का मर्म बताते हुए सूचन किया–

'अब आप मुंबई जाओगे; वहाँ हमसे जुड़ा प्रीति वाला मंडल है। वे आपको आगे करेंगे... लेकिन आप महंत (स्वामीजी) को ही आगे रखना... हमेशा नंबर 'टु' ही रहना।'

वाक़ई, प.पू. स्वामीजी ने गुरुहरि काकाजी महाराज की इस आज्ञा का अभी तक अक्षरशः पालन करके सभी के लिए एक अनुपम आदर्श स्थापित किया है। गुणातीत विभूतियों द्वारा मिली आध्यात्मिक सूझ के अनुरूप संबंध वालों के प्रति उन्होंने जो दासत्वभक्ति अदा की और आत्मीयता का अहसास कराया, वही गुरुवर्य योगीजी महाराज का सम्यक् परिचय बना है।

देखा जाए तो पृथ्वी पर अपना कार्य कराने हेतु प्रभु स्वयं ही योग्य पात्रों का चयन करके, उनके द्वारा अपने प्रागट्य की प्रतीति कराते हैं। इसी पावन दिन गुरुहरि काकाजी के अंतर की प्रसन्नता के पात्र, सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण से युक्त **प.पू. दिनकरभाई** का **प्रागट्य** होना साकार ब्रह्म की उपस्थिति का ही संकेत है।

पिछले वर्ष 2 सितंबर 2017 को शिकागो के स्थानिक मुक्तों ने प.पू. दिनकरभाई का प्रागट्य दिन मनाया। 31 अगस्त की सायं दिल्ली अशोकविहार मंदिर में रोज़ की धुन - सभा के अंत में **पू. पुनीत** ने दिसंबर 2017 में मनाए जाने वाले 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के निमंत्रण रूप वीडियो क्लीप दिखाते हुए बताया था –

यह क्लीप दिनकरभाई के प्रागट्योत्सव पर शिकागो में सबको दिखाई जाएगी।

वीडियो क्लीप देखने के तुरंत बाद, **प.पू. गुरुजी** ने पू. राकेशभाई से गंभीरता से कहा –

शिकागो की फ्लाईट के लिए फॅयर और टाइमिंग्स का पता लगाओ।

इसके अतिरिक्त **प.पू. वशीभाई** जो कि उस समय अमेरिका में थे, उनसे **प.पू. गुरुजी** ने फोन पर बात की –

मैं किसी भी तरह प.पू. दिनकरभाई के प्राकट्य पर्व के लिए शिकागो पहुँच जाऊँ?

प.पू. गुरुजी का यह जेस्चर देख कर सभी हैरान थे कि विदेश जाने के लिए वे कभी मंजूर नहीं होते, पर शिकागो जाना हो तो तुरंत 'हाँ' भर देते हैं। जैसे कि 2016 में 'गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के निमित्त प.पू. गुरुजी जिस उत्साह से शिकागो गए थे, वही उत्साह उनमें नज़र आ रहा था। इससे एहसास हुआ कि **प.पू. दिनकरभाई क्या विभूति होंगी! और... सभी के साथ प.पू. दिनकरभाई का** जो **एक अनूठा संबंध है**, उसका भी परिचय हुआ।

अब जब **दशहरा, शरदपूर्णिमा, दीपावली, नूतन वर्ष** जैसे त्यौहारों की श्रृंखला द्वार खटखटा रही है, तो हमें प्राप्त प्रगट गुणातीत स्वरूपों की निश्रा से मिली ज्योति से अपने अंतर को दिन-प्रतिदिन उज्ज्वल करें और इस हेतु जिन्होंने अपने द्वारा प्रभु के अस्तित्व का हमें एहसास कराया, ऐसे **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** के निम्न प्रसंगों से प्रगट प्रभु के साथ दृढ़ संबंध करने की प्रार्थना करें...

मैं देवी के देव का भक्त हूँ...

पूर्वाश्रम में मूलजी भक्त (मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी) ने अपने खेत में गन्ने की खेती की थी। उसके दो-तीन हिस्सेदार थे। फसल तैयार होने पर उसका गुड़ बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई। उस समय देवी का एक भक्त अपने कई शिष्यों, ऊँट, बैलगाड़े इत्यादि लेकर प्रत्येक कोल्हाड़ पर घूम कर, देवी की उपासना के बल पर सभी को डराता और गुड़ की दो कड़ाही झड़पता था।

मूलजी भक्त के खेत पर आकर उसने आँखें लाल करके कहा – *'गुड़ की दो कड़ाही हमें दो, वर्ना पूरा खेत जला दूँगा।'*

यह सुन कर मूलजी भक्त ने बावाजी से कहा – *'बावाजी! गुड़ की एक कड़ाही दूँगा, क्योंकि सबको एक ही देता हूँ। सो, तुमको दो कैसे दूँ? आपको लेना हो, तो ले लो। वर्ना रास्ता पकड़ो।'*

मूलजी भक्त के इन शब्दों से बावाजी के अंतर में क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो गई और आगबबूला होकर अंतिम बार मूलजी से कहा– *'तुम जानते हो, मैं देवी भक्त हूँ। तुम्हारा सारा खेत भस्म कर दूँगा और गन्नों में से रस खींच लूँगा! सबने दो कड़ाही दी हैं, तो तुम क्यों नहीं दोगे?'*

मूलजी भक्त ने खूब ही शांति से बावाजी से कहा– *'बावाजी! तुम्हारा बड़प्पन यहाँ नहीं चलेगा। तुम देवी के भक्त हो, तो मैं उस देवी के देव का भक्त हूँ। तुम्हें रस खींचना आता है, तो मुझे उसे वापिस डालना आता है। तुम्हें जलाना आता है, तो मुझे उसे बुझाना आता है। अतः झूठा बड़प्पन छोड़ कर गुड़ की एक कड़ाही लेनी हो तो ले लो, वर्ना यहाँ से चलते बनो।'*

मूलजी भक्त के इन शब्दों से बावाजी में ज्वाला भड़की। वनविचरण के दौरान जिस प्रकार श्रीजी महाराज ने तांत्रिक पिबेक को सबक सिखाया था, उसी प्रकार मूलजी भक्त ने भी इस बावाजी को उत्तेजित किया। बावाजी तो मंत्र पढ़ कर तुंबड़ी का पानी इधर-उधर छाँटने लगे।

मूलजी भक्त के हिस्सेदार अन्य कणबी पटेल तो डर से काँपने लगे– *पता नहीं, बावाजी क्या कर डालेंगे?*

मूलजी ने उनसे कहा– *'तुम घबराना नहीं, वे कुछ बिगाड़ नहीं पाएँगे।'*

बावाजी जो मंत्र पढ़ कर पानी छाँटने लगे थे, उसका कुछ परिणाम नहीं आया। सो मन में तो घबराने लगे। उसके अंतर में मूलजी भक्त की महिमा की छाप पड़ गई, परंतु पराजय स्वीकारने के लिए वे तैयार नहीं हुए। अतः पुनः उच्च स्वर में बोले– *'अब तो हम तीन कड़ाही गुड़ लेंगे।'* ऐसा कह कर उन्होंने रातभर वहीं ठहरने का फैसला किया।

रात को बावाजी ने देवी की आराधना की। देवी ने दर्शन देकर कहा– *'अरे मूर्ख! तू वहाँ कहाँ भिड़ गया? ये तो साक्षात् 'अक्षरब्रह्म' का अवतार हैं। उनके समक्ष तो मेरी या तेरी पतंगे भाँति कोई औकात नहीं है। भलाई इसी में है कि सुबह तू मूलजी भक्त के पैर छू कर, वे जो तूझे दें वह लेकर चले जाना।'*

यह सुन कर बावाजी तो स्तब्ध हो गए! उनका स्वयं का तो कोई बल था नहीं। जो कुछ भी बल था, वह तो इस देवी का ही था। अब जब देवी ही इन मूलजी भक्त की शक्ति के आगे लाचार थीं, तब उसका तो कोई उपाय चलने वाला था ही नहीं। अनजाने में मूलजी भक्त का अपराधी बनने का पश्चात्ताप उसके अंतर में होने लगा। सुबह की राह देख कर वह सारी रात बैठा ही रहा।

सुबह होते ही स्नान करके धुले हुए वस्त्र पहन कर बावाजी मूलजी भक्त के पास आए, उनसे क्षमा माँगी और प्रणाम किया। पश्चात्ताप से परिवर्तित बावाजी के हृदय को निहार कर, मूलजी भक्त उन पर खूब प्रसन्न हुए। अब उसे एक के बदले गुड़ की दो कड़ाही दीं। बावाजी ख़ुश होकर वहाँ से चल पड़े।

प्रसंग का सार –

1. मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी ने भगवान स्वामिनारायण की सर्वोपरिता एवं उनके साथ अपने संबंध का दर्शन कराया।
2. हमें एक शिक्षा दी कि जगत में रहते हुए रौब झाड़ कर या अपनी ताक़त के बल से हम कुछ भी हासिल नहीं कर सकते, जबकि विनयपूर्वक व्यवहार से सबका दिल जीत सकते हैं।

तुम्हें स्त्रियाँ बंधनरूप नहीं होंगी

श्रीजी महाराज ने वचनामृत गढडा मध्य 30 में कहा है कि 'स्वर्ण और स्त्री – ये दोनों अति बंधनकारी हैं। इन दोनों से जीव तभी अलिप्त रह पाएगा, जब प्रकृतिपुरुष से पर ऐसा जो 'शद्ध चैतन्य ब्रह्म' है, उसे ही सत्य जानेगा व उस ब्रह्म को ही अपना स्वरूप मानेगा और ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म ऐसे श्रीकृष्ण भगवान का भजन करेगा... उसे कंचन और कामिनी बाधारूप नहीं हो पाएँगे, जबकि अन्यों को तो ज़रूर करेंगे।'

स्वामी स्वयं ही ऐसे शुद्ध चैतन्य ब्रह्म थे। इसलिए उन्हें तो कंचन और कामिनी किस प्रकार बाँध सकते थे? श्रीजी महाराज ने स्वामी को आज्ञा दी – *आप कृपानंदस्वामी के मंडल में उनके साथ बुरानपुर जाना और वहाँ बहनों की सभा को संबोधित करना।*

श्रीजी महाराज द्वारा बुरानपुर जाने की आज्ञा तो स्वामी के अंतर में बैठ गई। परंतु अष्ट प्रकार से स्त्री, धन के त्यागी के लिए स्त्रियों को उपदेश देना योग्य नहीं लगा, फिर भी महाराज ने यह आज्ञा दी, सो स्वामी अत्यंत व्याकुल हो गए। स्वामी की परेशानी जान कर महाराज ने उनके बालसखा निष्कुलानंदस्वामी से कहा –

'आप स्वामी को समझाओ कि बुरानपुर जाएँ और वहाँ स्त्रियों की सभा में बातें करें।'

निष्कुलानंदस्वामी ने स्वामी से जैसे ही यह बात की, स्वामी तो अतिशय रोने लगे। महाराज को यह पता चलने पर, उन्होंने स्वामी को अपने पास बुलाया और नज़दीक बिठा कर मुक्तानंदस्वामी के कीर्तन की पंक्ति सुनाई –

'सद्‌गुरु की भक्ति करे सोई, जाके धड पर शीश ना होई।'

यह कीर्तन बोल कर स्वामी को अपने सीने से लगा कर, महाराज ने निम्न आशीर्वचनों द्वारा अपनी अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की –

'निर्गुणानंदजी! आपको स्त्रियाँ बंधनरूप नहीं होंगी। हज़ारों स्त्रियों की मौजूदगी में भी आप उनमें फिसलोगे नहीं। मैं तुम्हारे साथ ही हूँ।'

तत्पश्चात् स्वामी, कृपानंदस्वामी के साथ बुरानपुर गए। वहाँ दो महीने रूके और अंतर्वृत्ति रखते हुए स्त्रियों की सभा में दो मास तक बातें कीं। यूँ अपना शुद्ध चैतन्य ब्रह्मस्वरूप सिद्ध किया।

इस दौरान वहाँ के दीवान दादा को ब्रह्म भोजन करवाना था। सो, कृपानंदस्वामी, गुणातीतानंदस्वामी इत्यादि संतगण को भी आमंत्रित किया था। इन संतों ने सभी के साथ भोजन किया। बाद में जब दादा का देहांत हुआ, तब यमदूत उन्हें लेने के लिए आए। अतः दादा ने अपने सभी ईष्टदेवों को याद किया, परंतु किसी ने रक्षा नहीं की। फिर स्वामी और कृपानंदस्वामी दिव्य देह से यमपुरी गए और दादा को यम की मार से बचाया। दादा के पीछे उनकी स्त्री भी सती हो गई थी। इसलिए यमदूत दोनों के जीव को यमराज के पास ले गए। साथ में ये दोनों संत भी गये। यमराजा ने साधुओं का सन्मान किया। दादा ने इन साधुओं को भोजन कराया था, सो उस पुण्य के फल का निर्णय देने के लिए यमराजा ने इन जीवों को यमदूतों के साथ गढडा भेजा। महाराज ने उन्हें अंतरीक्ष में देखा और बोले – *'दादा और उनकी स्त्री नौ वर्ष के बाद सत्संग में जन्म लेंगे।'* महाराज की इस इच्छानुसार दीवान दादा ने वडोदरा में ब्राह्मण जाति में जन्म लिया। उनका नाम काशीनाथ था। सती हुई उसकी पत्नी ने भी वहीं जन्म लिया। इस प्रकार अक्षरब्रह्म श्री गुणातीतानंदस्वामी की सेवा का फल उन्हें मिला।

महाराज के वड़ताल में बिराजमान होने के कारण कृपानंदस्वामी के साथ स्वामी वहाँ आए। उसी दिन सायं स्वामी गोमती में नहाने गए थे। वहाँ पैर फिसल जाने के कारण उन्हें मोच आ गई। सो, पैर में दर्द होने लगा और चलना मुश्किल हो गया। इसी अरसे में महाराज ने किसी साधु को पुनः बुरानपुर भेजने की बात छेड़ी। सो, कई

सद्‌गुरुओं ने स्वामी को बुरानपुर जाने के लिए कहा। स्वामी ने उनसे कहा– *'मैं तो कल ही बुरानपुर से आया हूँ और मुझे पैर में चोट लगी है।'*

इस बात की सद्‌गुरुओं ने महाराज से शिकायत करी कि भादरावाला निर्गुणानंद बुरानपुर जाने के लिए मना कर रहा है। महाराज ने भी कह दिया– *''वह 'विमुख' है। उसके साथ कोई बात करे या उसे कोई स्पर्श कर जाए, तो उसने स्त्री के साथ बात करी कहा जाए।''*

स्वामी तो महाराज की यह लीला अतिशय शांत हृदय से निहार रहे थे। वे जोबनपगी के घर के पास लगी बाड़ में अपना आसन लगा कर बैठ गए। वह इसलिए कि जब महाराज अपने कक्ष के झरोखे में बैठें, तो उन्हें महाराज का दर्शन हो जाए।

प्रसंग का सार –

1. मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी ने प्रतीति कराई कि वे अपने नामानुसार सभी भावों-गुणों से परे हैं।
2. अपने श्रेय के लिए लोग कर्म-कांड, दान-धर्म से जुटे रहते हैं; जबकि भगवान स्वामिनारायण के संतों के सिर्फ जोग से दीवान दादा एवं उनकी पत्नी को सत्संगी कुटुंब में जन्म मिला। फिर स्वयं भगवान स्वामिनारायण की करूणा का तो कोई छोर ही नहीं।
3. श्रीजी महाराज ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी को 'विमुख' की उपाधि दी, तब भी उन्हें श्रीजी महाराज के प्रति कोई भावफेर नहीं हुआ और उन्हें केवल प्रभु के दर्शन की ही तान रही। हमें तो संत यदि हमारी मरज़ी के विपरीत तनिक भी कुछ कह दें, तो कितने नकारात्मक विचारों से घिर जाते हैं। अंततः संत को छोड़ने तक भी तैयार हो जाते हैं।

सभी संत - हरिभक्त साल में एक महीना यहाँ (जूनागढ़) आकर स्वामी का समागम करें

जूनागढ़ से प्रस्थान करने से पूर्व महाराज ने यह देख लिया कि मंदिर की सेवा सुचारू रूप से होगी या नहीं। पोशाक व आभूषण जो भेंट में आए थे, वे सभी उन्होंने ठाकुरजी के लिए दे दिए। स्वामीश्री की विनती पर महाराज ने वासुदेवानंद ब्रह्मचारी को ठाकुरजी की सेवा में रखा। मंदिर का संपूर्ण कार्यभार स्वामीश्री के जिम्मे था। अतः उस बारे में महाराज को किसी प्रकार की चिंता नहीं थी।

फिर महाराज ने सभी संतों, हरिभक्तों की सभा की। सभी को संबोधित करते हुए महाराज ने कहा– *'झीणाभाई के आग्रह से ही हमने यहाँ मंदिर बनाया है। उनकी भावना थी कि यहाँ मंदिर बनने से सोरठ के सभी सत्संगियों को पुष्टि मिले। नवाब साहेब को भी मंदिर के प्रति ममत्व है; अतः राज्य का भी पूरा सहकार मिलेगा। आज मैंने नवाब साहेब से कहा है – मैंने आपकी अरज स्वीकार कर मेरे जैसा ही साधु यहाँ नियुक्त किया है।* ***इस मंदिर के महंत सद्‌गुरु श्री गुणातीतानंदस्वामी मेरे अक्षरधाम का अवतार हैं।*** *यदि मन, कर्म, वचन से उनका संबंध रखोगे, तो ब्रह्मरूप होकर अक्षरधाम के अधिकारी होंगे। नवाब साहेब को हमारे वचन में विश्वास है, इसलिए वे खूब प्रसन्न हुए। सो, अब आप सभी सद्‌गुरुओं, संतों और सभी हरिभक्तों को हमारी आज्ञा है कि प्रति वर्ष एक महीने के लिए इन अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी का समागम करने के लिए यहाँ आना।* ***स्वामी का समागम करने के लिए यहाँ जो आएगा, उसकी करोड़ जन्म की कसर मैं एक जन्म में टाल दूँगा।'***
इतना कह कर सद्‌गुरु गोपाळानंदस्वामी से कहा–

'स्वामी! आपको तो ये गुणातीतानंदस्वामी के साथ लगाव है और आप इन्हें यथार्थ पहचानते भी हैं। सो, आप भी प्रति वर्ष एक महीना यहाँ आकर रहना और क्वचित् एक वर्ष न आ पाओ, तो दूसरे वर्ष एक साथ दो महीने यहाँ आकर रहना।' गोपाळानंदस्वामी ने महाराज की आज्ञा तुरंत ही शिरोधार्य की।

महाराज सभी संतों, हरिभक्तों की सद्रुचि देख कर अत्यंत प्रसन्न हुए। जूनागढ़ से निकलने से पहले अंतिम दिन पर सुबह महाराज ने सभी संतों से कहा– *'चलो, दामोदर कुंड में स्नान करके दत्तात्रय के नक्शेकदम पर चलने की प्रार्थना करें।'* यूँ साथियों के संग महाराज निकले। दामोदर कुंड में स्नान करने के बाद चडाण की वाव पर गए। यहाँ ब्रह्मानंदस्वामी ने सभी संतों को सुखड़ी का नाश्ता कराया। फिर सभी ने वाव का पानी मंगवा कर पिया। तत्पश्चात् ब्रह्मानंदस्वामी ने महाराज से कहा– *'सभी संत गिरनार चढ़ने जाएँगे, तो मंदिर में रसोई कौन बनाएगा? वहाँ तो (गुणातीतानंद) स्वामी अकेले हैं।'*

अतः महाराज उठे और अपने हाथ की छड़ी से एक लकीर खींच कर कहा– *'इस लकीर की पूर्व दिशा में जो संत खड़े हों वे सभी गिरनार चढ़ने जाएँ और जो लकीर की पश्चिम दिशा में खड़े हों, वे मंदिर लौट जाएँ।'*

महाराज की यह आज्ञा सुन कर पश्चिम दिशा में जो संत थे, वे सभी मंदिर गए। अन्य गिरनार चढ़ने गए। महाराज तो नीचे ही थोड़ी देर ब्रह्ममुनि के साथ गोष्ठि करने बैठे।

तब वैकुंठानंद नामक साधु गिरनार चढ़ने के लोभ में झाड़ी में छिप गया था। परंतु अब जब महाराज यहीं बैठे रहे, सो वह झाड़ी में से कैसे बाहर आकर गिरनार पर चढ़ता? फिर जब महाराज मंदिर के लिए रवाना हुए, तब वह साधु गिरनार चढ़ने के लिए गया। परंतु खूब देर हो गई थी और गिरनार चढ़ने गए हुए संत तो लौट रहे थे।

महाराज मंदिर में पधारे और थोड़ी ही देर में संत भी गिरनार चढ़ कर आ गए। 'वासुदेव हरे' की गूँज हुई और महाराज सभी को परोसने के लिए पधारे। सभी संतों को अच्छी तरह भोजन करवा कर तृप्त किया। बाद में स्वयं भोजन ग्रहण किया। तत्पश्चात् संतों एवं सखाओं को साथ लेकर 'धोराजी' की ओर जाने के लिए जीर्णदुर्ग (जूनागढ़) से निकले।

प्रसंग का सार –

1. श्रीजी महाराज ने संतों-हरिभक्तों को मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की अगाध महिमा बता कर स्पष्ट कर दिया था कि वे उनके रहने के धाम द्वारा पृथ्वी पर अखंड रहेंगे।
2. गुणातीत सत्पुरुष के समागम के बिना जीव की कसर टल ही नहीं सकती। यह कह कर श्रीजी महाराज ने सच्चे संत की संगत व समागम की अनिवार्यता बताई।

ठाकुरजी के पशुओं की घास हेतु स्वामिश्री ने बरसात आने से रोकी

एक दिन स्वामीश्री ने पार्षदों को बुला कर कहा– *'देखो, ठाकुरजी के बैल के लिए घास की ज़रूरत है। सो, डूँगर पर जाकर हरी घास काट कर ले आओ।'*

इस समय योगेश्वरदासस्वामी पार्षद के रूप में थे। वे भी घास काटने जाने के लिए तैयार हो गए। पहले भी जब-जब स्वामी पार्षदों को घास काटने के लिए भेजते, तब भी योगश्वरदासस्वामी सभी के साथ घास काटने के लिए जाते। सभी पार्षद जाने के लिए तैयार हुए।

उन्हें जाते हुए देख कर गोपाळानंदस्वामी ने उनसे पूछा– *'तुम सब कहाँ जा रहे हो?'*

पार्षदों ने उत्तर दिया– *'हम डूँगर पर घास काटने के लिए जा रहे हैं।'*

यह सुन कर गोपाळानंदस्वामी ने आकाश की ओर देखा और कुछ सोच कर कहा – *देखो, 'भेंसला' डूँगर के ऊपर बादल घिरे हुए हैं। सो, आज घास काटने के लिए जाना नहीं। बहुत बरसात होगी, तुम सब भीग जाओगे।'*

गोपाळानंदस्वामी की आज्ञा-वचन सुन कर सभी पार्षद घास काटने का हसिया छोड़ कर अपने-अपने आसन की ओर जाने लगे। इतने में स्वामीश्री घूमते-घूमते आए। पार्षदों को बैठा हुआ देख कर पूछा– *'क्यों घास लेने के लिए नहीं गए ?'*

तब उन्होंने बताया– *'गोपाळानंदस्वामी ने हमें अभी ही जाने के लिए मना किया है और बताया है कि 'भेंसला' डूँगर पर बादल घिरे हुए हैं, सो खूब बरसात होगी। इसलिए आज नहीं जाना।'*

स्वामीश्री उनकी यह बात सुन कर हँसे। फिर मस्तक घुमा कर बोले– *'तुम्हें पता नहीं है कि हमारे भगवान खूब ही दुलारे हैं। उन्हें रोज़ गाय का दूध पीने के लिए चाहिए। हम गायों को हरी घास खिलाएँगे, तभी तो दूध मिलेगा। भगवान को दूध पीना है, इसलिए बरसात नहीं आएगी और यदि बरसात होनी भी होगी, तो तुम्हारे लौटने के बाद होगी। सो, अभी निकलो।'*

स्वामीश्री की ऐसी आज्ञा होते ही सभी पार्षद तैयार होकर निकल गए। डूँगर पर पहुँच कर सभी पार्षद जब तक घास काट रहे थे, तब तक आकाश बादलों से घिरा रहा, लेकिन बरसात बरस नहीं पाई।

यहाँ मंदिर में गोपाळानंदस्वामी बार-बार आकाश की ओर देखने लगे। परंतु घनघोर बादलों से घिरे आकाश में से बरसात की एक बूँद भी बरस नहीं रही थी। उन्हें संकल्प उठा कि आकाश बादलों से घिरा हुआ है, फिर भी बारिश क्यों नहीं हो रही ? इतने में पार्षद घास की गठरियाँ लेकर मंदिर में पहुँचे। उन्हें देख कर गोपाळानंदस्वामी उनके पास गए और पूछा– *'मैंने तुम्हें घास काटने जाने के लिए मना किया था, फिर भी तुम क्यों गए ?'*
तब पार्षदों ने बताया– *'हमें स्वामीश्री ने कहा था कि ठाकुरजी बरसात नहीं होने देंगे, इसलिए जाओ। सो, हम गए थे।'*
यह सुन कर गोपाळानंदस्वामी हँसे और फिर सिर हिलाते हुए बोले – *'अहो ! यह तो जोगी का कार्य है। मेरा कहा तो वे ही पलटा सकते हैं।'*

यूँ कह कर सभामंडप में पधारे ही थे कि मूसलधार बारिश होने लगी। इस प्रसंग से पार्षदों को स्वामीश्री के दिव्य प्रताप की झांखी हुई !

जूनागढ़ में स्वामीश्री ने गुणातीत बातों की धुनी जमाई थी। स्वामीश्री को तो केवल एक ही तान थी कि सभी को श्रीजी महाराज के सर्वोपरि स्वरूप की दृढ़ता करा देनी है। अनादि ब्रह्म के संग से ही ब्रह्मरूप हो सकते हैं और ब्रह्मरूप होने के बाद ही पुरुषोत्तम की भक्ति का अधिकार प्राप्त होता है। स्वामीश्री की बातों में ऐसा जादू था कि जो सुनता, उसकी पंचविषय के प्रति की आसक्ति सहज टल जाती। इसलिए स्वामीश्री लगातार बातें करते रहते। जूनागढ़ में गुजरात और सौराष्ट्र के हरिभक्तों को बातें करके सुख प्रदान करते। सोरठ देश के हरिभक्तों को तो श्रीजी महाराज ने इस साधु को देकर मानो **'अपना सर्वस्व'** कृष्णार्पण किया था। इसीलिए स्वामीश्री बार-बार सोरठ देश में विचरण करते।

प्रसंग का सार –

1. मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की श्री ठाकुरजी के प्रति भक्ति एवं सामर्थ्य का ख्याल पड़ता है।
2. स्वामी ने तत्कालीन समय में जो बातें की, वे आज के युग में भी मुमुक्षुओं के लिए केवल उपयोगी ही नहीं, बल्कि साधकों के लिए एक दीपस्तंभ के समान है।

❁❁❁

अलविदा... जगरांव सत्संग के स्तंभ पू. महेन्द्र जयस्वालजी

24 सितंबर की सुबह साढ़े दस बजे जगरांव से खबर आई कि **पू. महेन्द्र जयस्वालजी** को अचानक दिल का दौरा पड़ा है, सो उन्हें लुधियाना के अस्पताल ले जा रहे हैं और... करीब सवा ग्यारह बजे तो समाचार आया कि पू. महेन्द्रजी अक्षरनिवासी हो गए। सुन कर सभी को खूब सदमा पहुँचा और अचंभा हुआ, क्योंकि 19 सितंबर को तो अपने 60वें जन्मदिन निमित्त पू. महेन्द्रजी दिल्ली मंदिर आये थे। दो दिन प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में बिता कर स्मृतियाँ लेकर जगरांव लौटे थे।

अतः तुरंत ही प.पू. गुरुजी ने कुछ हरिभक्तों, प.पू. दीदी एवं मुक्तों के साथ जगरांव जाने का प्रोग्राम बना लिया। कुछ मुक्त बायरोड रवाना हुए। सायं साढ़े चार बजे की फ्लाईट से लुधियाना जाने के लिए प.पू. गुरुजी एयरपोर्ट के लिए निकले। एयरपोर्ट पर जाकर बॉर्डिंग पास इत्यादि मिलने के बाद एनाउन्समेन्ट हुई कि मौसम की खराबी के कारण फ्लाईट रद्द हो गई है। इसी दौरान जगरांव के एक हरिभक्त से पता लगा कि सायं पाँच बजे पू. महेन्द्रजी की अंत्येष्ठि कर देंगे और अत्यधिक बारिश के कारण पंजाब में 'रेड एलर्ट' घोषित किया है। अतः प.पू. गुरुजी एवं बायरोड निकले सभी मुक्त मंदिर लौट आए।

सभी को ऐसा था कि बिगड़ते मौसम के कारण प.पू. गुरुजी अब कुछ दिनों के बाद ही जगरांव जायेंगे या पू. महेन्द्रजी के परिवार के सदस्यों को दिल्ली बुला लेंगे। लेकिन, पू. महेन्द्रजी की भक्ति व समर्पण कैसा होगा कि प.पू. गुरुजी की चित्तपट्टी पर वे छाए रहे और अगले दिन **25 सितंबर** की सुबह उठते ही सर्वप्रथम प.पू. गुरुजी ने मौसम के बारे में पता कराया और मौसम ठीक होने का समाचार सुनते व धूप देखते ही सुबह पौने दस बजे प.पू. गुरुजी ने सेवकों से कहा– *आज दोपहर की पौने तीन बजे की फ्लाईट से लुधियाना पहुँच कर जगरांव चले जाते हैं।* तुरंत ही जाने की तैयारियाँ शुरु हो गईं। पू. सुहृदस्वामीजी ने तब बताया–

अभी जब अपने जन्मदिन पर वे आए थे, तो काकाजी के समाधि स्थान पर परिक्रमा करते हुए मैंने उनसे पूछा कि अब कब आओगे ? तो वे सहज ही बोले थे कि अब मैं नहीं आ पाऊँगा, बच्चे कार्ड देने के लिए आएँगे।

दरअसल, 23 नवंबर को उनके छोटे बेटे की शादी है, सो उसकी व्यस्तता के कारण वे यूँ कह रहे थे। पर, मानो प्रभु ने होने वाली इस घटना का अप्रत्यक्ष रूप में इशारा दे ही दिया था। दोपहर सवा बारह बजे प.पू. गुरुजी मुक्तों के साथ एयरपोर्ट के लिए रवाना हो गये और दोपहर पौने तीन बजे की फ्लाईट से निकल कर सायं छः बजे तक जगरांव पहुँचे। पू. अशोक शर्माजी के यहाँ आधा घंटा बैठ कर अक्षरनिवासी पू. महेन्द्रजी के घर गए।

पू. महेन्द्रजी के भाई **पू. रविन्द्रजी, पू. कमलजी, सुपुत्र सन्नी-जिम्मी** ने भारी हृदय से, परंतु पू. महेन्द्रजी की भाँति प.पू. गुरुजी, हरिभक्तों, प.पू. दीदी का सत्कार किया। प.पू. दीदी के गले लग कर पू. महेन्द्रजी की धर्मपत्नी पू. कामिनीभाभी खूब रोईं। प.पू. गुरुजी ने पू. कामिनी भाभी के लिए महापूजा का जल भिजवाया। प.पू. दीदी ने प्रसादी का वह जल पिलाया और उन्हें सांत्वना दी।

पू. महेन्द्रजी के भाई **पू. रविन्द्रजी** ने बताया– *गाड़ी में जब लुधियाना अस्पताल ले जा रहे थे, तो अंतिम सांस लेते हुए **महेन्द्रजी ने ज़ोर से 'हे काकाजी महाराज' बोला था।***

उनके सुपुत्र **पू. सन्नी** ने बताया– ***तीन महीने पहले पापा ने मुझसे कहा था कि अगर जिंदगी में कामयाबी-सुख चाहिए, तो मेरे न होने के बाद भी गुरुजी के पास मंदिर जाना कभी मत छोड़ना और गुरुजी से पूछ कर ही हर काम करना।***

गुरुहरि काकाजी महाराज के माहात्म्य और उनके साथ पू. महेन्द्रजी के संबंध की बात करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने बात की–

...कई पुराने जोगियों ने काकाजी को देखा है। उनकी ताक़त-शक्ति भी देखी है। जो पुराने हैं उन्हें ख्याल होगा कि पहली बार काकाजी जब जगरांव आये थे, तब बाबा संतासिंह की धर्मशाला में पारायण रखी थी। जेन्ट्स के साथ काफ़ी लेड़िज़ भी थीं। हम तो मर्यादा के कारण धर्मशाला के कमरे में खड़े थे। यह बात खुद महेन्द्र ने मुझसे कही थी कि तब उसे कोई परिचय नहीं था। वो धर्मशाला के बाहर दोस्तों के साथ खड़ा था। काकाजी ने उसे बुलाया और मेरा परिचय देते हुए कहा– ***ये मुकुंदजीवन छोटा-सा है; तुम उसके साथ संबंध बनाये रखना-सेवा करना।***

महेन्द्र की चेतना काकाजी की थी। *वर्ना बाबा संतासिंह की धर्मशाला में इतने सारे इकट्ठे हुए थे, पर क्यों महेन्द्र को ही काकाजी ने बुलाया ?*

महेन्द्र के ज़रिये जिन-जिनको सत्संग हुआ, उनके दिल में से काकाजी को कोई हटा नहीं पाया... *उसका सारा श्रेय महेन्द्र को जाता है। तो जिसके द्वारा काकाजी ने इतनी सेवा ली, उसका काकाजी अहित होने देंगे क्या ? वो चेतना उनकी थी, तो उन्होंने अपने पास बुला ली।*

आपको प्रश्न होगा कि क्यों ? तो, अनंत कोटि ब्रह्मांड हैं। यह बात तो वैज्ञानिक भी मानने लगे हैं। यह बात भगवान स्वामिनारायण ने भी की है कि जिस प्रकार इस भरतखंड में भगवान 'स्वामिनारायण' के रूप में प्रगट हैं, वैसे ही दूसरे ब्रह्मांड में भी 'स्वामिनारायण' के रूप में भगवान प्रगट रहते हैं और साथ में ऐसे मुक्त को भी ले जाते हैं, जो वहाँ सत्संग का विकास करते रहते हैं। हो सकता है कि ***किसी ब्रह्मांड में महेन्द्रजी को ऐसे कार्य के लिए काकाजी ने वहाँ बुला लिया... जगत में जैसे मृत्यु होती है, ऐसी ये नहीं है...*** *पर, काकाजी जैसे संतों की बात पर भरोसा तो हमें करना ही पड़ेगा। भले दिमाग़ नहीं मानेगा, क्योंकि उसे एक मर्यादा है। दुःख होना स्वाभाविक है। पर, ये दुःख कैसा है ? जैसे अपना लड़का या फॅमिली का कोई मेम्बर फॉरेन जा रहा हो, तो उसे विदा करते हुए हम रोते हैं। पर तब समझदारी होती है कि फॉरेन जाकर खूब पढ़ेगा-लिखेगा, तरक्की करेगा। अपने घर का भला-श्रेय करेगा। ऐसी ये घटना है... प्रभु हमें भी बेसहारा तो छोड़ेंगे नहीं। महेन्द्रजी ने आपको भगवान स्वामिनारायण की पक्की निष्ठा कराई है कि मानवस्वरूप में वे अखंड प्रगट रहते हैं। वो निष्ठा पकड़े रखेंगे तो आप सच्चे महेन्द्र के हो...*

तत्पश्चात् धुन करके प.पू. गुरुजी पू. अशोकजी घर के आए। थोड़ी देर बाद प.पू. गुरुजी ने पू. महेन्द्रजी के परिवारजनों को वहाँ बुलाया और भजन करने के लिए उन्हें छोटी माला दी।

पुराने जोगी प.भ. झांझी साहेब के सुपुत्र **पू. राजू झांझी** ने रात को सभी मुक्तों के लिए प्रसाद की व्यवस्था करके मौके की सेवा लूट ली। रात को प.पू. गुरुजी पू. अशोकजी के घर ठहरे।

अगले दिन **पू. बलवंतराय भारद्वाजजी** की बहू पू. सगीनाभाभी पू. अशोकजी के घर सुबह का नाश्ता लेकर

आईं। दोपहर को भी पू. राजू झांझी के घर श्री ठाकुरजी का थाल किया। सायं करीब पाँच बजे लुधियाना के लिए रवाना हुए और सायं सात बजे की शताब्दी ट्रेन से निकल कर भक्तवत्सल प.पू. गुरुजी व सभी दिल्ली लौटे।

गुरुहरि काकाजी महाराज कई बार कहते – ***प्रगट के उपासकों का हर एक का एक-एक भागवत है।*** पू. महेन्द्रजी के निम्न प्रसंग गुरुहरि काकाजी महाराज एवं सत्संग के प्रति उनकी दृढ़ निष्ठा-भक्ति का दर्शन कराते हैं –

* 7 मार्च 1986 को गुरुहरि काकाजी महाराज ने स्थूल देह का त्याग किया। उनके विरह ने गुणातीत समाज के सभी मुक्तों को शून्यमनस्क बना दिया। लेकिन, गुणातीत ज्ञान के अनुसार परब्रह्म तत्त्व तो कहीं जाता नहीं। प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई जैसे ज्योतिर्धरों की हूँफ ने गुरुहरि काकाजी महाराज से जुड़े मुक्तों को खूब संभाला।

  पू. महेन्द्र जयस्वालजी भी गुरुहरि काकाजी महाराज से खूब जुड़े थे। कई प्रकार की-कई मंदिरों की बातें सुन कर उन्हें मन में ऐसा हुआ – ***यदि दिल्ली मंदिर में गुरुहरि काकाजी महाराज का स्थान अब भी वैसा का वैसा ही होगा, तो ही मैं वहाँ जाया करूँगा।***

  पू. महेन्द्रजी की भावना यहाँ दृढ़ हो गई, जब उन्होंने प.पू. गुरुजी की सेरेछाया में दिल्ली मंदिर में गुरुहरि काकाजी महाराज की वैसी की वैसी महिमा देखी और प्रतीति करी। तत्पश्चात् वे दिन-प्रतिदिन प.पू. गुरुजी से अत्यधिक जुड़ते गए। वो इस हद तक कि प.पू. गुरुजी जब भी पंजाब के दौरे पर जाते, तो वे अचूक उन्हें रीसीव करने आते।

  अपने ही केन्द्रों में जब वे कहीं गुरुहरि काकाजी महाराज की मूर्ति नहीं देखते, तो उदास हो जाते। क्योंकि हर केन्द्र के आरंभ हेतु गुरुहरि काकाजी महाराज द्वारा किए गए अनहद् परिश्रम का उन्हें पूरा ख्याल था।

* सन् 1997 में दिल्ली में भगवान भजती बहनों के निवास स्थान 'अक्षरज्योति' का निर्माण कार्य आरंभ हुआ। भवन को सम्पन्न होने में दस साल लग गए। इसी दौरान पू. महेन्द्रजी ने जगरांव में अपने घर के लिए प्लॉट खरीदा था। लेकिन, उन्होंने अपनी भावना व्यक्त करते हुए प.पू. गुरुजी से कहा – ***जब तक बहनों का निवास स्थान नहीं बन जाएगा, तब तक मैं अपने मकान का निर्माण शुरू नहीं करूँगा।***

  और... वाक़ई जैसे कि गुरुहरि काकाजी महाराज ने पू. महेन्द्रजी को पहले दर्शन में सूचन किया था कि प.पू. गुरुजी की सेवा करते रहना, उस वचन का पालन करते हुए अक्षरज्योति भवन के निर्माण हेतु वे प.पू. गुरुजी को लगातार सेवा भेजते रहे और... निर्माण कार्य पूरा होने के बाद ही अपने मकान की नींव रखी।

साधु को पदार्थ की चाहना नहीं होती, वे तो केवल भावना देखते हैं। सो, पू. महेन्द्रजी की इसी भावना के वश प.पू. गुरुजी 81 वर्ष की आयु में इतने परिश्रम से मानो श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए जगरांव गए थे।

भगवान स्वामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में यही प्रार्थना कि पू. महेन्द्रजी की भाँति हम भी प्रभु को जीवन समर्पित करें और उनके परिवार को यह आकस्मिक घटना-दुःख सहने का खूब बल दें एवं उनका परिवार पू. महेन्द्रजी के नक्शेकदम पर चलते हुए सत्संग को अपने जीवन में बरकरार रखे। यही पू. महेन्द्रजी को सही अर्थ में श्रद्धांजली होगी!

❁❁❁

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 4.10.'18, गुरुवार – भगवान स्वामिनारायण का स्मृति पर्व

(2) दि. 5.10.'18, शुक्रवार – एकादशी–व्रत
ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्मृति पर्व

(3) दि. 6.10.'18, शनिवार – मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी,
अनादि महामुक्त भगतजी महाराज
एवं ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्मृति पर्व

(5) दि. 10.10.'18, बुधवार – नवरात्रे प्रारंभ

(6) दि.18.10.'18, गुरुवार – **दशहरा,**
प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी का पार्षदी दीक्षा दिन

(7) दि. 20.10.'18, शनिवार – एकादशी–व्रत

(8) दि. 21.10.'18, रविवार – मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामीजी की अंतर्धान तिथि

(9) **दि.24.10.'18, बुधवार – शरदपूर्णिमा,**
मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामीजी का प्राकट्य दिन
प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी का भागवती दीक्षा दिन
प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि

(10) दि. 26.10.'18, शुक्रवार – ब्रह्मस्वरूप जागास्वामीजी की जन्मजयंती

(11) दि. 3.11.'18, शनिवार – एकादशी–व्रत

(12) दि. 4.11.'18, रविवार – वाघबारस

(13) दि. 5.11.'18, सोमवार – **धनतेरस (अशोकविहार मंदिर में 'धनपूजा'– सायं 6:00 से 7:30)**

(14) दि. 6.11.'18, मंगलवार – अक्षर चौदस

(15) दि.**7.11.'18, बुधवार – दिवाली (अशोकविहार मंदिर में 'शारदा पूजन'– सायं 7:35 से 8:45)**

(16) **दि.8.11.'18, गुरुवार – अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष–विक्रम संवत 2075 का प्रारंभ**
दिल्ली गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन– सुबह 9:30 से 11:30
अन्नकूट आरती – सुबह 11:45 बजे

(17) दि. 9.11.'18, शुक्रवार – **भैयादूज**

(18) दि.12.11.'18, सोमवार – **लाभ पंचमी**

(19) दि. 19.11.'18, सोमवार – प्रबोधिनी एकादशी–व्रत, तुलसी विवाह-प्रारंभ

(20) दि. 23.11.'18, शुक्रवार – **देवदिवाली**, तुलसी विवाह-समाप्त, श्री गुरुनानक जयंती

R.N.I. 28971/ 77 ***(Air Mail)***
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052